International Journal in Management and Social Science
Volume 14 Issue 03, March 2026 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

''भारत बांग्लादेश संबंधों का परिदृश्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन''

डॉ.संगीता मेश्राम
सहायक प्राध्यापक (राजनीति शास्त्र)
शासकीय महाविद्यालय लालबर्रा,
जिला – बालाघाट (म.प्र.)

शोध–पत्र

भूमिका

भारत वर्ष का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है। विभिन्न आक्रान्ताओं के पद चिन्ह भी स्मृतियों में है इन सबसे उबरकर 15 अगस्त 1947 को भारत एक सम्प्रभु राष्ट्र बन गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एक राष्ट्र के रूप में भारत ने हमेंशा ही अन्य राष्ट्रों की सम्प्रभुता का सम्मान किया है। विश्व शांति, गुटनिपेक्षता की नीति, विवादों के शांतिपूर्ण हल एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ में विश्वास किया है।

वर्तमान युग में जहां अन्य देश शक्ति–प्रदर्शन की राजनीति कर रहे है वहीं भारत ने अपने संसाधनों का प्रयोग स्व–विकास एवं परहित में किया है। भारत की स्थिति दक्षिण एशिया में इस प्रकार से है कि बांग्लादेश और म्यांमार पूर्वी हिस्से की सीमा से जुड़े हुए है, उत्तर पूर्व में चीन, नेपाल और भूटान है, पश्चिम में पाकिस्तान एवं उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान है, दक्षिण में श्रीलंका और मालदीव है जो समुद्री सीमा साझा करते है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ हमेंशा अहस्तक्षेप एवं वसुधैव कुटुम्बकंम की नीति अपनायी है।

बांग्लादेश पहले पाकिस्तान का एक अंग पूर्वी पाकिस्तान था आंतरिक कारणों से 1971 में बांग्लादेश का जन्म हुआ बांग्लादेशी शरणार्थीयों ने भारत में शरण ली। भारत ने भी कठिन समय में संयम की महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

बांग्लादेश के बनने के बाद से ही भारत ने मैत्रीपूर्ण एवं सहयोगी पड़ोसी देश के रूप में हमेशा बांग्लादेश से अच्छे संबंधों को बरकरार रखा। विपरीत परिस्थितियों एवं आपसी विवादों में शांतिपूर्ण हल निकालने पर विश्वास किया। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत एवं बांग्लादेश के संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत है।

भारत की विदेश नीति

भारतीय विदेश नीति प्रारंभ में आदर्शवाद, फिर यर्थावाद फिर आदर्शवाद एवं यर्थावाद का संतुलन स्थापित करने की कोशिश रही साथ ही विश्व शांति एवं राष्ट्रहित विदेश नीति का प्रमुख लक्ष्य है। भारत ने अपने आन्तरिक एवं बाह्यक राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ–साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही गुटबाजी से दूर रहकर वसुधैव कुटुम्बकम की नीति अपनायी है। सभी देशों के साथ विशेषकर पड़ोसी देशों के साथ व्यापार उद्योग एवं अन्य क्षेत्रों में सहयोग एवं सम्मान के संबंध निर्माण की नीति अपनायी है।

बांग्लादेश का जन्म एवं भारतीय दृष्टिकोण

वर्ष 1947 में भारत के विभाजन के फलस्वरूप पाकिस्तान का निर्माण हुआ जिसमें दो भाग बने पूर्वी पाकिस्तान एवं पश्चिमी पाकिस्तान। 1971 में पूर्वी पाकिस्तान एक नया स्वतंत्र देश बांग्लादेश बना, भारत और पाकिस्तान के बीच दिसम्बर 1971 को युद्ध प्रारम्भ हुआ इसके बाद भारत ने बांग्लादेश को स्वतंत्र देश की मान्यता प्रदान कर दी एवं भारत बांग्लादेश संबंधों का आरंभ हुआ।

बांग्लादेश की स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने शेख मुजीबुर्ररहमान को पाकिस्तान जेल से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

भारत बांग्लादेश संबंध

शेख मुजीबुर्ररहमान के बांग्लादेशी प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत एवं बांग्लादेश के बीच मित्रता एवं सहयोग की 25 वर्षीय संधि हुई आर्थिक संबंध मजबूत हुये व्यापार समझौता, सांस्कृतिक समझौता, नदी, द्वीप सीमा विवादों के समझौते हुए, कुल, मिलाकर 1980 तक संबंध मैत्रीपूर्ण रहे।

80 के दशक में बांग्लादेश के राष्ट्रपति जनरल इरसाद के सत्तारूढ होने पर तीस्ता जल समझौता फरक्का में गंगा नदी के जन बॅटवारे से संबंधित समझौते हुए। बांग्लादेश के राष्ट्रपति ने जुलाई 1986 में भारत की तीन दिवसीय सद्भावना यात्रा में भारतीय नेताओं से बातचीत की 1991 में नई दिल्ली में दोनों देशों के संयुक्त आयोग की बैठक हुई बांग्लादेश के लिए 30 करोड़ रूपये के ऋण की घोषणा की गई। बांग्लादेश में संसदीय प्रणाली की फिर से 1991 में स्थापना एवं बेगम खालिदा जिया के प्रधानमंत्री बनने के बाद 50 हजार चकमा शरणार्थियों की त्रिपुरा से वापसी एवं अनाधिकृत आवागमन की समस्या से निपटने की सहमति हुई।

जून 1992 को भारत ने तीन बीघा भारतीय क्षेत्र को बांग्लादेश को प्रदान किया अप्रैल 1993 में सार्क देशों का शिखर सम्मेलन बांग्लादेश की राजधानी ढ़ाका में आयोजित हुआ जिसमें आपसी आर्थिक सहयोग दक्षिण एशिया व्यापार पर बल, आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त अभियान चलाने संबंधी समझौते हुए। अप्रैल 2001 में बांग्लादेश की सेना द्वारा सीमावर्ती भारतीय क्षेत्र में कब्जा किया गया जिस पर केन्द्र सरकार ने कड़ा विरोध दर्ज किया। 1996 में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना भारत की यात्रा पर आयी जिसमें विभिन्न द्वि–पक्षीय समझौते किये गये। जनवरी 2004 में आतंकवाद एवं तस्करी आदि मामलो से संबंधित समझौता हुआ सीमा विवाद पर भी समझौते हुए, 2013 में भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी तीन दिन की यात्रा में बांग्लादेश गये उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। जून 2015 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के बांग्लादेश यात्रा में सीमा विवाद से संबंधित बातचीत के फलस्वरूप भारत की संसद ने 2015 में संविधान में 100वॉ संशोधन कर इन अंतः क्षेत्रों के आदान–प्रदान का कानूनी रास्ता साफ कर दिया भारत ने लगभग 17,160 एकड़ एवं बांग्लादेश ने 7,110 एकड़ परिक्षेत्र का आदान–प्रदान किया। व्यापारिक साझेदारी जिसमें SAFTA शामिल है। भारत में बांग्लादेश को बिजली आपूर्ति प्रारम्भ की एवं बांग्लादेश ने उत्तर–पूर्वी राज्यों में उग्रवाद पर लगाम लगाने सुरक्षा सहयोंग दिया। विभिन्न क्षेत्रों में 22 समझौतो पर हस्ताक्षर किये गयें।

2024 में शेख हसीना की लगातार चौथी बार विजय हुई लेकिन 2025 में क्रांति के बाद बांग्लादेश में सत्ता में बदलाव आया।

बांग्लादेश एवं भारत के बीच वर्तमान में तनाव के मुद्दे

बांग्लादेश में कई महिनों तक चले हिंसक एवं विरोध प्रदर्शनों के दौरान स्टूडेंट्स अगेंस्ट डिस्क्रिमिनेशन ने प्रधानमंत्री शेख हसीना को पद से इस्तीफा देने अल्टीमेटम दिया उग्र प्रदर्शन के दौरान शेख हसीना के आवास में प्रदर्शनकारियों ने तोड़फोड़ एवं लुटपाट किया जिसे सम्पूर्ण विश्व ने देखा इस कठिन स्थिति में प्रधानमंत्री शेख हसीना द्वारा जान की सुरक्षा हेतु भारत में शरण ली गई भारत ने भी मानवीयता का परिचय देते हुए उन्हें भारत में सुरक्षित शरण प्रदान की। बांग्लादेश के अन्तर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को मौत की सजा सुनाई है एवं भारत से शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग की है। शेख हसीना को शरण दिये जाने के बाद से भारत एवं बांग्लादेश के बीच तनाव व्याप्त है।

बांग्लादेश में उग्रवादी भीड़ द्वारा हिन्दुओं की खुलेआम हत्या जानमाल का नुकसान एवं भारत विरोधी वक्तव्य दिये जा रहे है। भारत में भी बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार पर तीव्र प्रतिक्रियाएं हुई है। बांग्लादेश के नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त मोहम्मद यूनुस के हाथ में बांग्लादेश की बागडोर दी गई थी।

उग्रवादियों की तुष्टिकरण की नीति को अपनाते हुए कोई ठोस कदम इन्होंने इन हत्याओं एवं प्रदर्शनों के खिलाफ नहीं अपनाया। 2024 से 2026 की अवधि में बांग्लादेश में भारत विरोधी भावनायें बढ़ गई राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर एवं अवैध अप्रवास बांग्लादेश में चिंता का कारण बनी शेख हसीना के सत्ता से हटने के बाद भारत ने बांग्लादेश के अंतरिम प्रशासक डॉ. मुहम्मद युनुस के साथ संवाद बनाए रखा। बेगम खालिदा जिया के निधन पर भारत की ओर से विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर प्रतिनिधि के रूप में ढ़ाका गए एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया था। फरवरी 2026 में हुए आमचुनाव के बाद बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी ने तारिक रहमान के नेतृत्व में बांग्लादेश में सरकार बनाई है। राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने उन्हे सपथ दिलायी। भारत ने बांग्लादेश की सरकार के साथ हमेंशा ही सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है।

वर्तमान में भारत का बांग्लादेश के प्रति दृष्टिकोण

बांग्लादेश में निरन्तर भारत विरोधी घटनाओं, वक्तव्यों एवं हिन्दुओं के प्रति हिंसा के दौरान भी भारत का नजरिया सर्तकता पूर्ण, रणनीतिक एवं व्यवहारिक रहा शेख हसीना के तख्तापलट एवं भारत में शरण लिये जाने के बाद भी अंतरिम सरकार के प्रशासक मुहम्मद युनूस से संबंध बनायें रखने की कोशिश बनाये रखी एवं वर्तमान में तारिक रहमान के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी भारत ने सुरक्षा, द्वि–पक्षीय मुद्दों के शांति पूर्ण समाधान पर ध्यान केन्द्रित किया हुआ है। दोनों देश SAARC, BIMSTEC एवं IQRA जैसे संगठन में भी सक्रिय भागीदारी निभा रहे है।

निष्कर्ष

बांग्लादेश के जन्म के साथ ही भारत के साथ संबंध मैत्रीपूर्ण रहे सीमा एवं नदी विवाद के अलावा सामान्यतः स्थिति सहयोग की रही है। द्वि–पक्षीय वार्ताओं एवं संधियों से दो पड़ोसी हमेंशा ही शांति की नीति अपनाते रहे किन्तु पीछले दो–तीन वर्षो से बांग्लादेश में भारत विरोधी रवैये से दोनों देशों के मध्य वैसा परिवेश वातावरण नहीं देखने को मिल रहा जैसा कि कुछ दशको पहले था। बांग्लादेशी नागरिकों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार, भारत विरोधी बयानबाजी, शेख हसीना के भारत में शरण लिए जाने की वजह से स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है। भारत ने इस नाजुक मौके पर भी संयम पूर्ण रवैया अपनाते हुए अपने विश्वशांति एवं वसुधैवकुटुम्कम की नीति का परिचय दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- खत्री, हरीश कुमार, (2018), ''दक्षिण एशियाई देशों की राजनीति'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।

- मोदी एम.पी., खत्री हरीश कुमार, (2019), ''अन्तर्राष्ट्रीय संगठन'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
- प्रतिमा डॉ. (2018), भारत बांग्लादेश संबंध : ''बदलते परिप्रेक्ष्य'' हिन्दी बुक सेन्टर न्यू देहली।
- खत्री हरीश कुमार, (2018), ''भारत की विदेश नीति'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
- Raghavan, Shinath "1971: A Global History of the Creation of Bangladesh (2013), Harvard Unioversity Press.
- खत्री हरीश कुमार, (2019), ''अन्तर्राष्ट्रीय कानून'' कैलाश पुस्तक सदन भोपाल।
- https://www.bbc.com
- https://www.crisisgroup.org